

## ऋग्वेद-संहिता, प्रथमाष्टक के प्रथम अध्याय की छन्दोमीमांसा

शिवनारायण शास्त्री

इस निबन्ध में ऋग्वेदसंहिता के प्रथम अष्टक के अष्टाक्षर गायत्री में निबद्ध १७ और अनुष्टुप छन्द में निबद्ध २ सूक्तों के कुल १९४ मन्त्रों की समीक्षा अक्षरपरिणाह की दृष्टि से की गई है। इस के अतिरिक्त वैश्वामित्र मधुच्छन्दस् के एकमात्र और सूक्त (९.१) के दस मन्त्रों की मीमांसा भी इससे उनका अध्ययन पूरा हो जाने की दृष्टि से की गई है।

वाणी का लय में बहना छन्द कहाता है।<sup>१</sup> वैदिक छन्द मु यतः सात हैं : १ गायत्री, २ उष्णिक्, ३ अनुष्टुप्, ४ बृहती, ५ पङ्क्ति, ६ त्रिष्टुप् और ७ जगती।<sup>२</sup> इन सात छन्दोजातियों में रचित मन्त्र या श्लोक<sup>३</sup> की समुच्चित अक्षरसङ् या अष्टाक्षर पाद से ले कर द्वादशाक्षर पादपर्यन्त २४ से प्रारंभ करके चार-चार अक्षरों की वृद्धि से<sup>४</sup> क्रमशः १ गायत्री (२४ अक्षर), २ उष्णिक् (२८ अक्षर), ३ अनुष्टुप् (३२ अक्षर), ४ बृहती (३६ अक्षर), ५ पङ्क्ति (४० अक्षर), ६ त्रिष्टुप् (४४ अक्षर), और ७ जगती में निबद्ध मन्त्र या श्लोक की अक्षरसङ् या ४८ होती है।

यह अक्षरपरिमाण ऋग्वेद का सामान्य मानक परिमाण है। इन्हें ऋषिच्छन्द या आर्ष छन्द कहा जाता है। इनमें एकेक अक्षर अधिक होने से उस छन्दोजाति को 'दैवी' कहा जाता है और न्यून होने से 'आसुरी' कहा जाता है। ऋग्वेदीय मन्त्र और लौकिक श्लोक प्रायः ऋषिच्छन्दों में रचित हैं।<sup>५</sup>

१ वाग् वै सरिरं छन्दः। शतपथब्राह्मण ८.५.२.४

२ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च, बृहती च प्रजापतेः। पङ्क्तिस्त्रिष्टुब् जगती च, सप्तच्छन्दांसि तानि ह।। ऋ० प्रा० १६.१

३ ऋषिदृष्ट रचना मन्त्र कहालाती है और छन्दोबद्ध लौकिक रचना श्लोक।

४ चतुरुत्तर वै वाचो रोहाः। जैमिनीय ब्राह्मण २.३.६७, अष्टाक्षरप्रभृतीनि चतुर्भूयः परं परम्।। ऋ० प्रा० १६.२

५ दैवान्यपि च सप्तैव, सप्त चैवासुराण्यपि।। ऋ० प्रा० १६.२

एकोत्तराणि देवानां, तान्येवैकाक्षरादधि। एकावमान्यसुराणां, ततः पञ्चदशाक्षरात्।। ३

तानि त्रीणि समाग य, सनामानि सनाम तत्। एकं ऽवत्युष्णिच्छन्दस्, तथा गच्छति स पदम्।। ४

एवं त्रिप्रकृतीन्याहुर, युक्तानि चतुरुत्तरम्। ऋषिच्छन्दांसि, तैः प्रायो, मन्त्रः श्लोकश्च वर्तते।। ५



१ गायत्री और २ उष्णिक प्रायः त्रिपदा होती हैं। १ गायत्री  $८ \times ३ = २४$  और २ उष्णिक  $८ \times २ + १२ = २८$  अक्षर। पर वे चतुष्पदा भी मिलती हैं। १ गायत्री  $६ \times ४ = २४$  अक्षर और  $७ \times ४ = २८$  अक्षर।<sup>१</sup>

शौनक ने गायत्री के विषय में दो बातें और आवश्यक बताई हैं : अष्टाक्षर पाद का षष्ठ अक्षर गुरु और सप्तम अक्षर लघु होना चाहिये। कात्यायन ने ६ त्रिष्टुप् (एकादशाक्षर पाद) के विषय में लघूपोत्तमता को आवश्यक नहीं माना लगता है। उन्होंने अक्षरसं या पर ही बल दिया है।<sup>२</sup>

ऋग्वेद संहिता के १.१ सूक्त की नौ ऋचाओं में से १, ३, ४, ५, ७ ऋचाएँ  $८ \times ३ = २४$  अक्षरों से युक्त हैं और इनका षष्ठ अक्षर गुरु, सप्तम अक्षर लघु तो है ही, पाँचवाँ अक्षर लघु है। अर्थात् ये जविपुला गायत्री में हैं।

दूसरी ऋचा का द्वितीय पाद 'रीळियो नूतनैरुत', ६.२ पाद 'यदङ्ग दाशुषे तुव', ८.३ पाद 'वर्धमानं सुवे दमे।।' और ९.३ पाद 'सचस्वा नः सुवस्तये।।' जात्य यण् के व्यवाय से, अष्टाक्षर भी होंगे, गुरु-लघु भी यथास्थान स्थित होंगे और २.२ पाद लघूपोत्तम भी होगा।

८.१ पाद एकाक्षरन्यूनता से निचृद् गायत्री में है और सप्तम अक्षर गुरु भी है। इस स्थिति में पादपूर्ति के लिये शौनक, कात्यायन और पिङ्गल नाग, सब ने यण् वर्णों के संयोग का सदृश स्वरवर्णों के व्यवधान (व्यवाय) से या व्यूह से (विच्छेद) का विधान किया है।<sup>३</sup> इस व्यवस्था में वर्णधर्म स्वरों

१ गायत्री, सा चतुर्विंशत्यक्षरा।

अष्टाक्षरासु त्रयः पादाशु, चत्वारो वा षडक्षराः। ऋ० प्रा० १६.९

अष्टाविंशत्यक्षरोष्णिक, सा पादैर्वर्तते त्रिभिः।

पूर्वावष्टाक्षरौ पादौ, तृतीयो द्वादशाक्षरः। ऋ० प्रा० १६.२०

सप्ताक्षरैश्चतुर्भिर्द्वे, 'नदं', 'मंसीमहि'ति च।। २२

द्वितीयमुष्णिक त्रिपदा। अन्त्यो द्वादशकः। चतुःसप्तकोष्णिकेव।। ऋग्वेदानुक्रमणी ५.१,८

२ एकादशिद्वादशिनोर्लघावष्टममक्षरम्। ऋ० प्रा० ८.२१

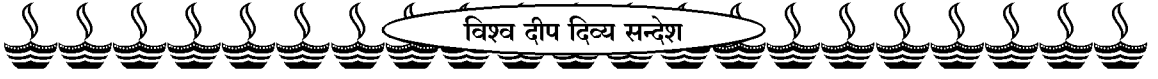
दशमं चैतयोरेवं, षष्ठं चाष्टाक्षरेऽक्षरम्।। २२

वर्षिष्ठाणिष्ठयोरेषां, लघूपोत्तममक्षरम्। गुर्वेतेतयोर्ऋक्षु, तद् वृत्तं छन्दसां प्राहुः।। ऋ० प्रा० १७.२२

३ व्यूहेदेकाक्षरीभावान्, पादेषूनेषु स पदे।

क्षैप्रवर्णाश्च संयोगान्, व्यवेयात् सदृशैः स्वरैः।। ऋ० प्रा० १७.१४

व्यूहैः स पत् समीक्ष्योने, क्षैप्रवर्णैकभाविनाम्।। ऋ० प्रा० ८.२२

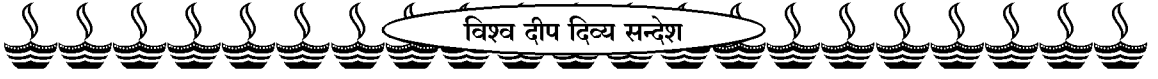


(स बद्ध स्वर के अतिरिक्त आगे-पीछे के उदात्तादि) को यथायोग्य रूप में लाकर संहितापाठ के अनुकूल बनाना भी आवश्यक है। इस व्यवस्था से ८.१ पाद का शुद्ध, पूर्ण पाठ यों होगा: 'राजन्तमधुवराणां'। ९.२ पाद १-२ पादों की पूर्वरूप एकादेश सन्धि के कारण एकाक्षर से न्यून, निचृद् है। इसकी पूर्ति एकादेश का व्यूह करके 'सूनवे, अग्रै, सूपायनो भव।' पाठ से होगी ॥ १)

दूसरे सूक्त के ४-६ मन्त्र तो पूर्वोक्त मानकों पर खरे हैं। पर १.२ पाद 'वायवायाहि दर्शत, इमे सोमा अरङ्कृताः।' पादसन्ध्य गुणसन्धि को तोड़ कर ही निर्दोष होगा। २.२ पाद 'जरन्ते, तुवामच्छां जरितारः।' जात्य यणसंयाग के व्यवाय से और ६.३ पाद 'मक्षुवित्था धिया नरा ॥' यणसन्धि के व्यवाय से अष्टाक्षर और जविपुल तो होंगे ही, क्षैप्रस्वरित के भङ्ग के कारण क प का उच्चारण भी नहीं होगा। २.१, ७.३, ८.३ और ९.१ और ३ पादों की लघुगुरुव्यवस्था भी जविपुला की न होकर २.१ में रविपुला (ऽ । ऽ), ७.३ में मविपुला (ऽऽऽ), ८.३ में यविपुला ( । ऽऽ), ९.१ और ३ पादों में भविपुला (ऽ ॥) गायत्री की है ॥ २ ॥

तीसरे सूक्त के १२ मन्त्रों में से सात (१, ३, ५-७, १० और १२) मन्त्र तो सुलक्षण हैं। २.३ पाद 'धिष्ण्या वनतं गिरः ॥', ४.२ पाद 'सुता इमे तुवायवः।' जात्य यणव्यवाय से पूर्ण और जविपुल होंगे। ४.१ पाद रविपुल (ऽ । ऽ), ३ पाद सविपुल ( । । ऽ), ९.१-२ पाद तविपुल (ऽऽ ।), ११.१ पाद रविपुल (ऽ । ऽ) और अष्टाक्षर हैं। ११.२ पाद निचृद् गायत्री में है ॥ ३ ॥

चौथा सूक्त मधुच्छन्दस् का गायत्रीनिबद्ध दस ऋचाओं वाला चौथा सूक्त है। ३.१ पाद यविपुल निचृद् गायत्र है। इस में सप्तम अक्षर गुरु है। २ पाद भी निचृद् गायत्र है। पर व्यूह-व्यवाय की प्रक्रिया से 'विदियामं सुमतीनाम्।' पाठ अष्टाक्षर तो हो जाता है, पर सविपुल ( । । ऽ) हो जाता है। ५.१-२ पाद ( । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ, । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ) अक्षर-विन्यास में भी जविपुल और अष्टाक्षर होने से 'गायत्री' के लक्षण पर खरे उतरते हैं। ८.२ पाद भविपुल (ऽ ॥) गायत्र है। १०.१ पाद 'यो रायो अवनिर्महान्' पाठ से, पूर्वरूप सन्धि के व्यूह से, सुलक्षण गायत्र स पन्न होता है ॥ ४ ॥

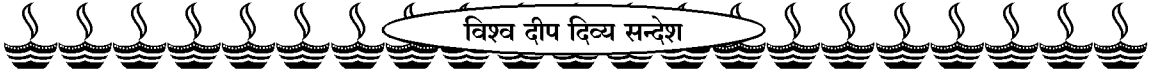


पाँचवें सूक्त की दस ऋचाओं की रचना विश्वामित्र कौशिक के पुत्र मधुच्छन्दस् ने गायत्री में की है। १.१-२ पाद 'आ तुवेता नि षीदत, इन्द्रमभि प्र गांयत।', व्यवेत और व्यूढ पाठ से सुलक्षण अष्टाक्षर बनेगा। २.१ पाद निचृद् गायत्र है। २ पाद षडक्षर है। पर 'ईशानं वारियाणाम्।' पाठ से जात्य यण् के व्यवाय से निचृद बनता है। ३.२ पाद की पूर्ति 'स राये स पुरंन्धियाम्' पाठ से, ५.३ पाद 'सोमांसो दधियाशिरः।', यणसन्धि के व्यवाय से, ६.१ पाद 'तुवं सुतस्य पीतये,' पाठ से सुलक्षण गायत्र बनेगा। ७.२ पाद 'आ त्वां विशन्तुवाशवः,' यणसन्धि के व्यवाय से पूर्ण और जविपुला गायत्री में स पत्र होगा। अष्टम मन्त्र के तीनों पाद सप्ताक्षर, निचृद् हैं और इससे यह मन्त्र यथापाठ में पादनिचृद् गायत्री में है। पर, कात्यायन ने इस का उल्लेख नहीं किया है। अपितु 'आदौ गायत्रं प्राग्घैरण्यस्तूपीयात्' (ऋ० १.३१)-ऋ० अ० १२.१४ परिभाषा से यह गायत्री में है। यह स्थिति तीनों पादों में 'तुवां' व्यवाय से 'तुवां स्तोमां अवीवृधन्, तुवामुक्था शतक्रतो। तुवां वर्धन्तु नो गिरः।।' पाठ से ही स भव है। ९.१ पाद भी 'यस्मिन् विश्वानि पौंसिया।।' जात्य यण् के व्यवाय से अष्टाक्षर और लघूपोत्तम होगा।

इन व्यवायों के अतिरिक्त इस सूक्त के शेष सभी मन्त्र सर्वाङ्गस पत्र अष्टाक्षर हैं।। ५।।

छठे सूक्त की दस ऋचाओं में से १.१ पाद अष्टाक्षर किन्तु नविपुल है। २.१ षडक्षर पाद 'युञ्जन्तियस्य कामिया', सन्ध्य और जात्य यण् के व्यवाय से तथा ८.२ पाद 'गणैरिन्द्रस्य कामियैः।।' जात्य यण् के व्यवाय से पूर्ण और सुलक्षण जविपुला गायत्री में स पत्र होंगे। १.३ पाद भविपुल अष्टाक्षर है। सूक्त के शेष २६ पाद जविपुला गायत्री में पूर्णक्षर हैं।। ६।।

सातवें सूक्त की दस ऋचाओं में से २.१ पाद 'इन्द्र इद्धरियोः सचा', यणव्यवाय से न केवल पूर्ण और जविपुल होता है, अपितु ५।५।, १५ १५ व्यवस्थित लय में स पत्र होता है। ३.३ पाद भी १५ १५ १५ १५ विशेष लय से संपन्न है। ४.१ पाद 'इन्द्र, वाजेषु नो अव', व्यवाय से जविपुल और अष्टाक्षर है। ८.२ पाद 'कृष्टीरियर्तियोजसा।' यणव्यवाय से श्रेष्ठ गायत्र बनता है। ९



मन्त्र के तीनों पादों में एकेक अक्षर कम हैं। अतः यह मन्त्र पादनिचृद् गायत्री में है। १ पाद का ५वाँ अक्षर लघु है और छठा गुरु। २ पाद में अन्तिम त्रिक भगण (ऽ।।) है। १०.२ पाद 'हवामहे जनेभ्यः।' जात्य यण् के व्यवाय से सुलक्षण, जविपुल पूर्ण और ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ अक्षरव्यवस्था से सुन्दर लय से स पत्र हो जाता है। शेष सब पाद सुलक्षण जविपुला गायत्री में हैं ॥ ७ ॥

आठवें सूक्त में दस ऋचाएँ हैं। १.१ पाद की पूर्ति और सुलक्षणता 'आ इन्द्र, सानसिं रयिं', गुणसन्धि के व्यूह से होगी। २.३ षडक्षर पाद 'तुवोतांसो नियर्वता', जात्य और सन्ध्य यण् के व्यवायों से सुलक्षण गायत्र बनेगा। ६.२ पाद नविपुल अष्टाक्षर है। ८.१ पाद 'एवा हियस्य सूनृतां,' क्षैप्र सन्ध्य यण् के व्यवाय से, १०.१ पाद 'एवा हियस्य कामियां,' एक क्षैप्र सन्ध्य और एक जात्य यण् के संयोग के व्यवाय से और दूसरा पाद 'स्तोमं उक्थं च शंसिया।' एक जात्य यण् के व्यवाय से सुलक्षण होंगे।

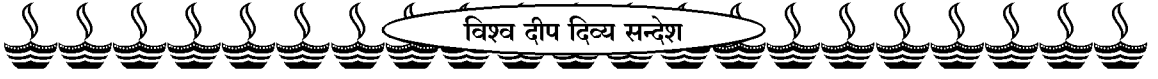
९.१.१ पाद 'इन्द्रेहि मत्सियन्धंसो', ३.३ पाद 'सचैषु सर्वनेषुवा', ५.२ पाद 'राधं इन्द्र वरेणियम्।', ६.२ पाद 'अस्मान्तसु तत्र चोदय, इन्द्रं राये रभस्वतः।' पाद गुणव्यूह और ९.३ पाद 'विश्वायुर्धेहियक्षितम् ॥' व्यवेत पाठ से सुलक्षण गायत्र बनेंगे। अर्थात् ये सब पाद संहितापाठ में अनार्ष सन्धियों से विकृत हुए हैं और इन के व्यवाय अथवा व्यूह से संहिता निर्दोष और आर्ष लय में आएगी।

९.९.१ पाद अष्टाक्षर तो है। पर नविपुलता के कारण लय एकदम बदल गई है। मेधातिथि को लय की दृष्टि से लघु-गुरु-लघु-गुरु अक्षरविन्यास बहुत पसन्द है। यह इन सूक्तों के गणक्रम से विदित होता है।

१०.१ पाद 'सुतेसुंते नियोकसे', सन्ध्ययणव्यवाय से पूर्ण और जविपुल होता है।

नवम सूक्त के अन्य सभी पाद जविपुल, पूर्णाक्षर और लघु-गुरु-लघु की नृत्यत्पदा जविपुल शैली में सुन्दर लय से प्रस्तुत किये गए हैं ॥ ९ ॥

प्रथम मण्डल के आरंभ में इन नौ सूक्तों के अतिरिक्त कौशिक विश्वामित्र के ज्येष्ठ पुत्र मधुच्छन्दस् का गायत्री छन्द में और इसी नृत्यत्पदा

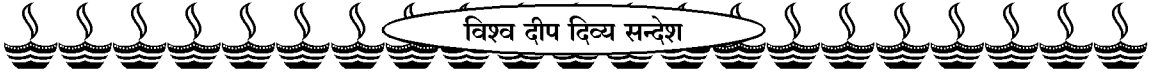


शैली में निबद्ध एक सूक्त और है : नवम मण्डल के दस ऋचाओं वाले प्रथम सूक्त की रचना भी मधुच्छन्दस् ने ही की है। इस का छान्दस विवरण इस प्रकार है :

नवम मण्डल के प्रथम सूक्त का ३.३ पाद यथापाठ में निचृद् गायत्र और यविपुल है। इसका पञ्चम अक्षर लघु, छठा गुरु और सातवाँ गुरु है। ४.१ पाद 'अभियर्ष महानां', सन्ध्य यण् का व्यवाय करके भी यविपुल निचृद् गायत्र रहता है। पञ्चम अक्षर लघु, छठा गुरु और सातवाँ भी गुरु है। ५.३ पाद 'तुवामच्छा चरामसि', ३ पाद 'इन्द्रो, तुवे न आशसः ॥', ७.३ पाद 'स्वसारः पारिंये दिवि ॥', ८.१ पाद 'तमीं हिनुवन्त्यगुवो', अथवा 'तमीं हिन्वन्तियगुवो', ९.१ पाद 'अभी३ममधिन्या उत', १०.१ पाद 'अस्येन्दिन्द्रो मर्देषुवा', व्यवेत पाठ से जविपुलअष्टाक्षरस पत्र होते हैं। शेष सभी २२ पाद इसी प्रसन्न और नृत्यत्पदा लघु-गुरु क्रम की शैली में स्वाभाविकता को लिये हुए जगणविपुला ८×३=२४ अक्षर वाली गायत्री जाति में निबद्ध हैं ॥ ९.१.२ ॥

प्रथम मण्डल में मधुच्छन्दस का १२ ऋचाओं वाला एक, दसवाँ सूक्त अनुष्टुप् (८×४=३२ अक्षरों) में भी है। इस दसवें सूक्त का १.२ पाद प्रथम पाद से पूर्वरूप सन्धि के व्यूह से और यणसन्धि के व्यवाय से 'गायत्रिणो, अर्चन्तियर्कमर्किणः।' पाठ से और २.२ पाद 'भूरियस्पष्ट कर्तुवम्', क्षैप्र और जात्य यणसंयोगों के व्यूह और व्यवाय से अष्टाक्षर बनेगा। ३.२ पाद 'कक्षियप्रा' पाठ से निर्दोष होगा। ४.२ पाद प्रथम पाद से दीर्घ सन्धि के व्यूह और यणसन्धि के व्यवाय से 'स्वर, अभि गृणीहिया रुव।' एवं ४ पाद 'सचा, इन्द्र', पादसन्ध्य पूर्वरूप के व्यवाय से निर्दोष होंगे। ५ मन्त्र को १ पाद 'शंसियं' तथा ४ पाद 'सखियेषु' पाठ से और ६.२ पाद 'सुवीरिंये' पाठ से। ८.३ पाद 'सुवर्तनी' पाठ से जात्य यणसंयोग के व्यवाय से पूर्ण होंगे ॥ १० ॥

ऋग्वेदसंहिता के दूसरे ऋषि जेतृ माधुच्छन्दस् का अनुष्टुप् में निबद्ध आठ ही ऋचाओं वाला एक ही सूक्त है। प्रथम अध्याय में इस ग्यारहवें सूक्त का १.३ पाद स्पष्टतः निचृत् है। २.३ पाद 'तुवामभि', जात्य यणसंयोग के व्यवाय से और ३.२ पाद 'दस्यन्तियूतयः', यणसन्धि के व्यवाय से, ५.१ पाद 'तुवं' पाठ से, ३ पाद 'तुवां' और ७.२ पाद 'तुवं' पाठ से जात्य यण् के



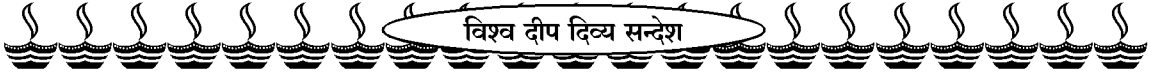
व्यवायों से, पूर्ण होंगे। ७.३ पाद 'मोजसा, अभि' पादसन्ध्य दीर्घ के छेद से पूर्ण होगा।। ११।।

इस अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि -

(१) गायत्री में अष्टाक्षर तीन पाद आवश्यक हैं।

(२) मधुच्छन्दस् ने गायत्री और अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध मन्त्रों में अष्टाक्षर पादों की ही रचना की थी। किन्तु कालप्रवाह में उच्चारण में त्वरा दोष के प्रभाव से कुछ शब्दों में स्वर+स्वर अपना स्वाभाविक पृथग् रूप नहीं रख पाए। विशेषकर मात्रिक इ-उ वर्णों को बोलने की जल्दी में, क्षिप्रता में, अर्धमात्रिक स्वस्थानिक अर्धस्वर य्-व् के रूप में सन्धिज संयोग शब्द का जात्य, स्वाभाविक, अङ्ग समझा जाने लगा। पदान्तीय और पदादिस्थ इ - उ + स्वर के उच्चारण में भी इसी क्षिप्रता के कारण क्षैप्र वर्णों, य्, व् का प्रयोग भाषिक प्रवाह में, व्यवहार में, आ गया। कालान्तर में यह स्थिति अन्य सवर्ण और असवर्ण स्वरों के युगपत् प्रयोग में दीर्घ, गुण, वृद्धि, पूर्वरूप और पररूप एकादेश सन्धिज वर्णों के रूप में व्यवहार में पूर्वापेक्षया अधिक प्रयुक्त होने लगी।

सङ्क्रमण के काल में तो ऋग्वेदसंहिता इस नए उच्चारण से, भाषिक परिवर्तन से मुक्त रही। कालान्तर में श्रुतिपर परा में नूतन उच्चारण संहिता के कलेवर में छन्द की कीमत पर भी प्रविष्ट हो गए। जात्य यणसंयोग वाले पद तो जहाँ जितनी बार प्रयुक्त हुए हैं, वहाँ उतनी बार चाहे जो छन्द रहा हो, वह उतने अक्षरों से प्रायेण भग्न हुआ है। अन्य सन्धिज क्षैप्र या एकादेश भी जहाँ कहीं, जितनी मात्रा में मन्त्रशरीर में प्रविष्ट हुए हैं, वहाँ उतनी ही बार, उतने ही अक्षरों से वेदगिरा के पादभङ्ग हुए हैं। अनुक्रमणियों में संक्रमणकाल की स्थिति का उल्लेख किया प्रतीत होता है। अनुक्रमणियों में कुछ मन्त्रों के छन्द का विवरण तो संहिता के मूल आर्ष पाठ का ही विवरण प्रस्तुत करता है। आज उपलब्ध पाठ उस पर खरा नहीं उतरता। कुछ मन्त्रों का छान्दस विवरण उपलब्ध सन्धियुक्त पाठ को पुष्ट करता है। और तो और, पाणिनि द्वारा पादपूर्त्यर्थ विहित 'सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्' (अष्टाध्यायी) व्यवस्था भी



में बदलने के कारण न अष्टाक्षर रहा, न जविपुल। इसे 'बर्हिः सीदन्तुवस्रिधः ॥' करने से पाद सुलक्षण (जविपुल), पूर्ण और आर्ष हो जाएगा ॥ १३ ॥

१४वें सूक्त की १२ ऋचाओं के ३६ पादों में से ३० पाद सुव्यवस्थित लघु-गुरुक्रमयुक्त, पूर्णाक्षर, जविपुला गायत्री में हैं। दो, ८.१ और ११.१, पाद जात्य यणसंयोग के कारण खण्डित, निचृद् हो गए हैं। दो ७.२ और ११.२ पाद पादसन्ध्य पूर्वरूप के कारण निचृद्, एक १०.१ पाद जात्य और सन्ध्य यणसंयोगों के कारण विराड् गायत्र, एक १२.१ पाद यणसन्धि के कारण निचृद् हो गया है। ये सब निम्न प्रकार से व्यूह और व्यवाय कर के आर्ष रूप में आएँगे :

१. तान् यजत्राँ ऋतावृधो, अग्रे पत्नीवतस्कृधि ॥ (१४.७.१-२)।
२. ये यजत्रा य ईळियास् (८.१)।
३. विश्वेभिः सोमियं मधुवग्र इन्द्रेण वायुना। (१०.१)
- ४-५. तुवं होता मनुर्हितो, अग्ने, यज्ञेषु सीदसि। (११.१-२)
६. युक्ष्वा हियरुषी रथे (१२.१) ॥ १४ ॥

१५वें सूक्त में १.१, २.१, ३.२, ४.३ (कुल चार) पाद भुरिग् गायत्र तथा नविपुल हैं। १.२ पाद 'ऋतुना, ऽऽ तुवा (अथवा 'ऋतुना, आ त्वा') पाठ से विशन्तुविन्दवः।' ३.३ पाद 'तुवं हि रत्नधा असि' ॥ पाठ से सुलक्षण गायत्र बनते हैं। १०.१ पाद नविपुल है। ११.२ पाद निचृद् है। पर 'दीदियग्री शुचिव्रता।' पाठ से, सन्ध्य यण् के व्यवाय से यह पूर्णतः सुलक्षण हो जाता है। १२.१ पाद 'सन्तिय',<sup>१</sup> जात्य यण् के व्यवाय से पूर्ण और सुलक्षण होगा।

शेष पाद सुलक्षण जविपुल गायत्री में हैं ॥ १५ ॥

१ १२.१-२ पादों में ऋषि ने ही गुणसन्धि नहीं की है। यह 'ऋत्यकः' (अष्टाध्यायी) से भी विवृत्ति का विषय रहा हो सकता है।

क्रमशः.....

2149-50, सैक्टर-13, हुडा, भिवानी